तेज पाक्षिक, मजोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : ३ वर्ष : १९ १.१४ फरवरी १९८३

दीवाना





अहा ! पार्क में बैठने का आनन्द ही कुछ और है। चारों तरफ हरियाली और रंगीन नज़ारे ! देख कर दिल खुश हो जाता है। सबसे अच्छी बात यह है कि पार्कों में लड़कियां आती हैं। आँखें गर्म करने का सुनहरा मौका मिलता है। यह भी
हो सकता है कि इसी सिलसिले में कहीं मामला जुड़ जाये और रोमांस का चक्कर-वक्कर चल जाये। देखो यह लड़की रोज अपने कुत्ते को घुमाने इसी पार्क में ले जाती है...
यह आइडिया मुझे अब तक क्यों नहीं सूझा ? मैं पंद्रह दिनों से देख रहा था यह रोज कुत्ता लेकर इस पार्क में आती है।
बेटा लल्लू, अब के मोटा हाथ मारने का मौका है। मैं भी कल ही जाकर एक कुत्ता ले आता हूं। उसे लेकर इसी पार्क में बैठा करूंगा। कुत्ता कुत्ते को देखेगा तो भाई चारे की भावना जोर पकड़ेगी,हमारे कुत्तों में जिगरी दोस्ती हो जायेगी। कुत्तों में दोस्ती हो गयी तो मालिकों में दोस्ती अपने आप ही हो जायेगी।
यही कुत्ता ठीक रहेगा। उसका कुत्ता मांगरेल है। मेरा कुत्ता कॉकरस्पेनियल या डैशंड होना चाहिये।अलग नसल तो होनी ही चाहिये।
NEL
कमाल है,मैं पहली बार अपने डैशंड टाइगर को लेकर पार्क में आया और आज पहली बार ही वह लड़की नजर नहीं आ रही है। हर रोज शाम के छ: बजे आ जाया करती थी। और आज सवा छ: बजने को हो रहे हैं। की गल हो गयी पापे ?
वह रही प्यारे ! लेकिन उसका कुत्ता साथ नहीं है। नहीं, नहीं, उसने गोदी में उठा रखा है।
GRRRR
यू स्टूपिड, तुम्हें पता नहीं कि कोई लड़की बिल्ली को लेकर जा रही हो तो कुत्ता लेकर उसके नजदीक नहीं जाना चाहिये। मेरा कुत्ता भाग गया। अनफेथफुल -----------! आई हेट डॉगज़ नाव ! मैं अब कभी इस पार्क में नहीं आऊंगी।


३० प्रतिशत दिल के दौरे हरिजन व अनुसूचित जातियों के नेताओं को पड़ें।
क्रिकेट टैस्ट टीम में २५ प्रतिशत स्थान अनुसूचित वर्गों के खिलाड़ियों के लिये हों।
२८ प्रतिशत पत्थर पिछड़ी जातियों के आंदोलनकारियो द्वारा फेंकने के लिये रिजर्व हों।
२५ प्रतिशत कैंसर सिगरेट न पीने वालों के लिये आरक्षित करो।
फिल्मी दुनिया की हीरोइनों के रोमांस की अफवाहों में २० प्रतिशत जगहें अपंगों के लिये आरक्षित की जायें।
कवि सम्मेलनों में २० प्रतिशत हूटिंग पिछड़ी जातियों के कवियों के लिए रिजर्व करो।

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के



डाक्टर बी० बी०, सराय पाली, रायपुर (म० प्र०)

प्र० : मेरी शादी हेमा मालिनी से करा सकते हैं क्या आप ?

उ० : कितनी उसकी उम्र है, पहले उसको कूत,
हे-मा, हे-मा करोगे, बनकर उसके पूत।

नगेन्द्र तरुण, भरतपुर (राज०)

प्र० : श्री जगजीवनराम जी आजकल क्या सोच रहे हैं ?

उ० : हरिजन का मतलब है भाई, हरि से ध्यान लगाओ,
छोड़ो झाड़ू-पंजा अब तुम कुर्सी पर चढ़ जाओ।
मैं तो इंदिरा से मिल जाऊंगा
कोई मेरा क्या कर लेगा ?

विजय शर्मा 'दिलदार', लुधियाना

प्र० : ठोकर खाने से पहले ही इन्सान को अक्ल क्यों नहीं आती ?

उ० : टक्कर में अक्कल छिपी, नहीं प्रत्यक्ष दिख पाय,
ठोकर लगते ही तुरत ऊपर को आ जाय।

राजकुमार रूपवानी, कटनी (म० प्र०)

प्र० : क्या मेरा फोटो भी दीवाना में छप सकती है ?

उ० : चिल्ली जी के फ्रेंड क्लब का मेम्बर हो जाय,
ऐंड़े-भेंड़े मित्र का चित्र तुरत छप जाय।

रशीदुल अमा, कुसुंडा (धनबाद)

प्र० : इन्सान को बचपन में मां सुलाती है, बुढ़ापे में मौत, तो जवानी में ?



उ० : कुछ दिन तक प्यार भरी बोलियां सुलाती हैं,
फिर उसको नींद की गोलियां सुलाती हैं।

सुरेश चन्द्र शर्मा 'निशांत', जबलपुर (म० प्र०)

प्र० : यदि तुलसीदास जी इस युग में होते तो रामायण लिखना पसन्द करते या आपकी जैसी कविता ?

उ० : धर्म-कर्म से मोड़ मुख, छोड़ राम से प्रीत,
हो जाते वे लखपति, लिखकर फिल्मी गीत।

राकेश कुमार खुल्लर, चांपा (बिलासपुर)

प्र० : जनता पार्टी की मौत का कारण बताइए।

उ० : सारी जनता को मालूम है, काका क्या बतलायें कारण,
जनता पार्टी को ले डूबे, चरण सिंह और राजनारायण।

किशोर भारती, संगहू (दार्जिलिंग)

प्र० : वर्तमान राजनीति में सफलता कैसे प्राप्त की जा सकती है ?

उ० : राजनीति की रीत में सफल वही नीत,
अपनी कोठी बना ले, फोड़ राज्य की भीत।

मनफूल गोरी, सब्जी मण्डी, बीकानेर

प्र० : किसी छात्रा से प्रेम करने का सरल उपाय बताइए ?

उ० : कालिज की कैंटीन में, मुफ्त खिलाओ चाट,
प्रातः उसके नाम की माला जपिए आठ।

राजकुमार, दुलियाजान (असम)

प्र० : पुरुष की दृष्टि में नारी क्या है ?

उ० : कवि 'प्रसाद' ने बतलाया 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो',
काका कहते हैं काकी से, मैं पौआ, तुम अद्धा हो।

सेन गुप्ता, लोहरडगा (रांची)

प्र० : काली मूंछें हैं काका की, काले सिर के बाल,
दाढ़ी क्यों सफेद है ? मेरा हल कीजिए सवाल।

उ० : ध्यान देउ व्याकरण पर, सिर होता पुल्लिंग,
जल्दी बूढ़ी हो गई, दाढ़ी स्त्रीलिंग।

सरोज बेहराबी, बांस वाड़ा (राजस्थान)

प्र० : कोई हसीना अपने रूप-यौवन पर इतराये तो ?

उ० : हसीनों ! चार दिन की चाँदनी पर क्यूं उछलते हो,
कभी ढल जायेगा जोबन तुम्हारा दोपहर होकर।

डा० प्रताप तरकर, कुरकन्दा—फरह (मथुरा)

प्र० : खिड़की से मुँह निकाला, जब चल रही थी गाड़ी,
काका की उड़ी दाढ़ी, काकी की उड़ी साड़ी।

उ० : जंजीर खींच डाली, झटके से रुकी गाड़ी,
उसने पकड़ ली दाढ़ी, हमने पकड़ ली साड़ी।

अनिल कुमार सोनी 'अनिल' भोपाल

प्र० : आप कविता लिखने में व्यस्त हों और काकी का मूड प्यार की बातें करने का हो तो ?

उ० : मटका करके नैन जब, चलें प्रेम के बैन,
हो जाते बेचैन हम, रुक जाता है पैन।

सुनील वर्मा, जनकपुरी, नई दिल्ली

प्र० : मैं आपके घर आना चाहता हूं ?

उ० : सबसे पहिले भेजिए हमको अपना चित्र,
चेहरे का कट देखकर, मालुम करें चरित्र।

सुरेश खुराना, जींद, (हरियाणा)

प्र० : मुहब्बत की खातिर कुछ लोग ईमान क्यों बेच देते हैं ?

उ० : नेता कुर्सी के लिए, बेच देंय ईमान,
फिर दोषी हो किसलिए, मामूली इन्सान।

चन्द्रभान अनाड़ी, जबलपुर

प्र० : मुहब्बत और मौत अचानक ही आजायें तो ?

उ० : आ जाये यदि सामने यह अनहोनी बात,
गले लगाओ मुहब्बत, मार मौत में लात।

मदन किशोर होतवानी—रायपुर

प्र० : फालतू समय कैसे काटना चाहिए ?

उ० : आलस्य और प्रमाद की मत जिन्दगी जिया करो,
कुछ न कुछ किया करो, फाड़कर सिया करो।

रामौतार अग्रवाल, बर्दवान (बंगाल)

प्र० : बंदूक की गोली और नजर के तीर में क्या फर्क है ?

उ० : व्यर्थ सुन्दरी के लिए, पिस्टल या बंदूक,
करे नजर के तीर से, पत्थर के दस टूक।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

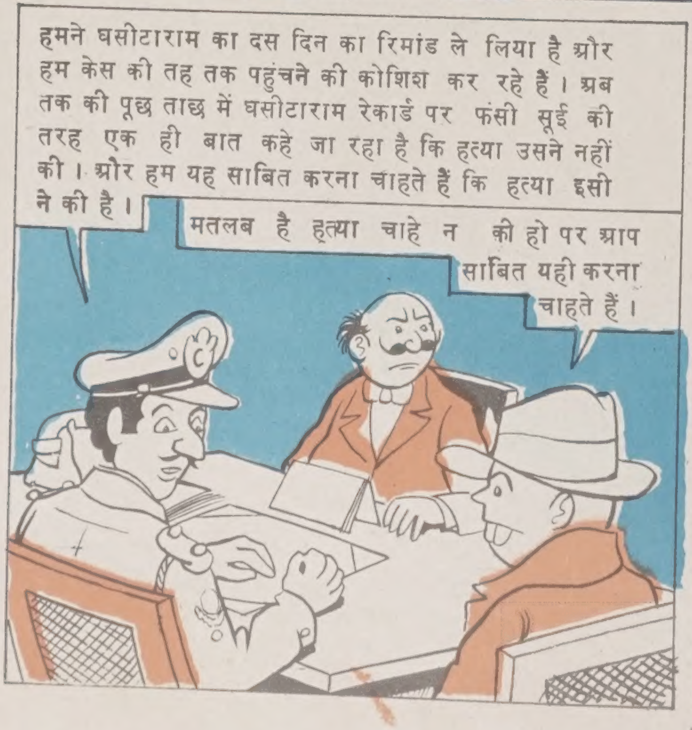
काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मोटू पतलू

मोटू-पतलू आजकल किराये का ग्रीन स्टार होटल चला रहे हैं। होटल के काम में उन्हें भरपूर लाभ की आशा थी। पर दूसरे धन्धों की तरह यहां भी मोटू-पतलू को आँसू पीने और गम खाने पड़ रहे हैं, और कोई कमी रह गई है तो वह किस्मत के मारे घसीटाराम ने पूरी कर दी है। पिछले दिनों ग्रीन स्टार होटल में मिसिज पालकीवाला नाम की एक करोड़पति औरत आकर ठहरी थी। मिसिज पालकीवाला का आगे पीछे कोई सगा-सम्बन्धी नहीं था। उसने घसीटाराम से खुश होकर उसे गोद ले लिया और अपने सारे कारखाने, सारी मिलें चाय के बाग और अपनी तमाम सम्पत्ति घसीटाराम के नाम कर दी थी।

करोड़पति माँ का बेटा बनने के नशे में घसीटाराम की अब यह हालत थी, कि उसने आदमी को आदमी समझना छोड़ दिया था। पर उसका यह नशा अभी पूरे जोबन पर आ भी न पाया था, कि किसी ने मिसिज पालकीवाला को दूध में जहर दे दिया और उसकी हत्या हो गई। दूध का गिलास होटल के किचन से घसीटराम लाया था, जहर की शीशी पर घसीटाराम की उंगलियों के निशान थे। मिसिज पालकीवाला की मृत्यु के बाद उसकी सम्पत्ति घसीटाराम को मिलनी थी, इसलिये हत्या का आरोप आया घसीटाराम पर और जो अभी माँ की गोद में बैठा था, देखते ही देखते हवालात की कोठरी में जा पहुंचा। इसके बाद का रोना-धोना आगे के हंसते गाते चित्रों में देखिए।









जी नहीं। बेटर हर मेहमान का आर्डर लेकर जाते हैं। मैंने घसीटाराम से कहा था, कि आप चलिए हम बैरे के हाथ दूध भिजवा देंगे।
दैट इज दा प्वाइंट। क्या आपने दूध बैरे के हाथ भिजवाया ?
जी नहीं, घसीटाराम ने जिद की और इस बात पर अड़ गया कि वह खुद दूध लेकर जायेगा।
सिर्फ अड़ गया, या मरने मारने को तैयार हो गया ?
जी हाँ। नौबत हाथापाई तक आ गई। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि दूध लेकर जाना बेटर का काम है फिर घसीटाराम खुद दूध ले जाने के लिए झगड़ा क्यों कर रहा है ?
क्योंकि वह रास्ते में नजर बचा कर दूध में जहर मिलाना चाहता था।
मैं माता जी की सेवा खुद करना चाहता था।
बको मत ? यह सेवा ही तो है कि तुमने उन्हें हमेशा के लिए आराम की नींद सुला दिया है।
तुम अपनी सफाई में जितना बोलोगे उतना ही उल्लू बनोगे।
मिसिज पालकीवाला ने घसीटाराम को गोद लिया। उनकी करोड़ों रुपये की सम्पत्ति घसीटाराम को तभी मिल सकती थी, यानि अब मिल सकती है, जबकि मिसिज पालकीवाला इस दुनिया में नहीं रहीं। इसका मतलब है मिसिज पालकी वाला के जिन्दा रहते घसीटाराम कुछ भी नहीं था, और इसके लिए टेप रिकाडर की बातचीत में घसीटाराम ने साफ तौर पर कहा है कि मिसिज पालकीवाला क्यों नहीं मरेंगी। वह मुझसे पहले मरेंगी।
साफ जाहिर है कि इस बातचीत के बाद घसीटाराम ने मिसिज पालकी वाला को जहर देकर मारने की योजना बनाई और उन्हें दूध में जहर दिया। जहर की शीशी पर घसीटाराम की उंगलियों के निशान हैं। इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता है ?
ऐसे चक्कर में फंसे हो कि जान बच भी गई, तब भी बीस साल तक जेल में चक्की पीसने के तजुर्बे से नहीं बच सकते।
मैं ही उल्लू था, जो गोद जाने के झांसे में आ गया।
और मेरा नाम भी डुबो दिया।


मुझे अब भी लग रहा है कि इस गुत्थी का कोई सिरा अब भी गायब है। क्या आप प्राईवेट डिटेक्टिव के तौर पर मुझे इस केस की छान-बीन करने की अनुमति देंगे ?
शौक से छान-बीन कीजिए. हम आपको पूरा सहयोग देंगे। पर यह निश्चित है कि आप अपना समय बर्बाद करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर पायेंगे।
आपकी इस उदारता का धन्यवाद। सबसे पहले मैं होटल में मिसिज पालकीवाला के कमरे की जांच करना चाहूंगा।
कमरा सील है। जब आप कहेंगे खोल देंगे।
धन्यवाद। अब आप मुझे घसीटाराम की उंगलियों के असल निशान और जहर को शीशी पर बने निशानों की एक कापी दे दीजिए।
यह लीजिए।
यह निशान शीशी पर से किस एंगल से लिए गये हैं ?
ऊपर शीशी की गर्दन के पास यह निशान पाये गये हैं। वैसे इस रिपोर्ट पर निशानों का पूरा ब्यौरा दिया गया है।
थैंक्स वेरी मच। अच्छा अब हम चलते हैं।
NOTICE
चेलाराम के जाने के बाद घसीटाराम की बुरी हालत थी।
मैं कानों का कितना कच्चा था, जो मैंने गोद जाने के लिए माता जी की बात मान ली। अरे मैं मर गया। यह क्या चिपट गया मेरे कान पर ?
एक खटमल है, जो यह देख रहा है कि तुम्हारा कान कितना कच्चा है और कितना पक्का है ?
गाजर के हलवे की तरह मेरा कान खा गया। अरे एक खटमल नहीं, यहां तो मोटे-मोटे खटमलों की पूरी फौज है मेरा खून चूसने के लिए ?
यह जेल है प्यारे। यहां क्या तुम्हें यह उम्मीद थी कि फूलों के गद्दों पर बैठ कर नीतू सिंह का डांस देखोगे दिल बहलाने के लिए।
हम तुम्हारा दिल बहलायेंगे बच्चा। हम तुम्हें अफ्रीका का जादू दिखायेंगे। चीन का जादू दिखायेंगे।
हवालात में मेरे साथ यह कैसा कैदी बन्द है। यह कैदखाना है या पागलखाना ?
यह सरकारी मेहमान खाना है मेरे जमूरे। आओ, हम तुम्हें बंगाल के काले जादू का कमाल दिखा दें।
किसी प्रकार मुझे यहां से बाहर निकाल दो ना जादूगर भाई।
जरूर निकालेंगे। हम तुम्हे मेंढ़क बना देंगे और तुम फुदकते हुए कैद खाने से बाहर निकल जाओगे।
छू छू···छूआ छू—। काली-काली महा काली कलकत्ते वाली। बजा दे ताली, इसे बना मेंढ़क की साली।
मेंढ़क की साली। मतलब है मेंढ़क भी नहीं मेंढकी बनाओगे मुझे ?
हम तुम्हें कौए की चोंच बनायेंगे। छू छू···छूआ छू···।
हे भगवान, तूने कहां लाकर मारा है मुझे ?
तो क्या कहीं और जाकर मरना है तुम्हें ? बताओ कहां जाना है ? कहाँ का टिकट काटूं ?
जहन्नुम में जाना है। जहन्नुम का टिकट काट दो।


टिकट क्या काटना है। राजनारायण की सिफ़ारिश पर फ्री पास दे दिया है तुम्हें। चलो तैयार हो जाओ। जहन्नुम एक्सप्रेस छूटने वाली है। गार्ड सीटी बजा रहा है। तुररररर—।
नीचे झुक जाओ। इंजन बन जाओ। ऐ पहलवान ! तुम डिब्बा बनकर इन्जन के पीछे जुड़ जाओ। गार्ड झंडी लहरा रहा है। सीटी बजा रहा है। गाड़ी छूटने वाली है।
छुक छुक छुक...छुक छुक छुक—? धूआं उड़ाती रेलगाड़ी आ रही है। किसी ने आत्म हत्या करनी हो तो जल्दी से लेट जाओ पटरी पर।
मुझे करनी है आत्महत्या, और कौन करेगा।
अरे देखना। गाड़ी पटरी से उतर गई। समाचार पत्रों को सूचना दे दो। पचास आदमियों की जानें बाल-बाल बचीं। गार्ड बाबू का एक भी बाल नहीं बचा।
उधर घसीटाराम कैदखाने के पागलों में पागल बन रहा था इधर होटल में मोटू और डिटैक्टिव चेलाराम पालकीवाला हत्याकांड के रहस्य की खोज में लगे थे और उनकी सहायता कर रहा था मिसिज पालकीवाला का सैक्रेट्री।
एक क्लू मिला है, जिससे सिद्ध होता है कि जहर घसीटाराम ने नहीं दिया।
क्लू की गहराई में जायेंगे तो फिर यही पता लगेगा कि जहर घसीटाराम ने दिया है।
अगर होटल के किचन से दूध ले जाते समय घसीटाराम रास्ते में दूध में जहर मिलाता तो जहर की खाली शीशी अपनी जेब में डाल लेता। शीशी अपने साथ ले जाकर उसे दूध के गिलास के पास ले जाकर रखने की क्या जरूरत पड़ी थी।
इसका मतलब है जहर रास्ते में डालने की बजाये वहीं दूध के गिलास में डाला गया जहां वह मिसिज पालकीवाला की टेबल पर रखा गया।
मतलब है घसीटाराम ने दूध का गिलास टेबल पर रख कर वहीं जहर मिलाया।
वहीं मिलाया। मगर घसीटाराम ने नहीं मिलाया।
पर शीशी पर उंगलियों के निशान ?


वे जहर दिये जाने के बाद शीशी पर पड़े । देखिये मैंने उंगलियों के निशानों की पूरी रिपोर्ट ध्यान से देखी है । जहर की खाली शीशी पर घसीटाराम की उंगलियों के निशान उलटे हैं ।
देखिये । रिपोर्ट के अनुसार, उंगलियों के निशानों की पोजीशन यह हैं । मतलब है घसीटाराम ने शीशी इस प्रकार पकड़ी । अब बताओ ! क्या जहर देने के लिये शीशी को इस प्रकार पकड़ा जाता है ?
नहीं ।
क्या इस प्रकार शीशी पकड़ कर इसके अन्दर की चीज किसी गिलास में उलटी जा सकती है ?
नहीं ।
जहर देने के लिए शीशी को इस प्रकार पकड़ा जाना चाहिए । इस प्रकार ही शीशी के अन्दर का पदार्थ कहीं और उलटा जा सकता है ।
बिलकुल ठीक कह रहे हो तुम ।
और शीशी पर बने निशानों के अनुसार शीशी इस प्रकार पकड़ी गई । जिस प्रकार इसका जहर उलटने की क्रिया हो ही नहीं सकती ।
इसका मतलब है, जहर किसी और ने दिया ।
और वह रबड़ के दस्ताने पहने हुए था । इस प्रकार उसकी उंगलियों के निशान तो आये नहीं । घसीटाराम ने बाद में ऊपर से खाली शीशी उठाई होगी जिस से उसकी उंगलियों के निशान आ गये ।
इसका मतलब है दूध का गिलास मेज पर रखे जाने के बाद उसमें जहर डाला गया । और उस समय वहां घसीटाराम और मिसिज पालकीवाला के इलावा कोई तीसरा भी था ।
वह वहां छुपा हुआ था । नजर बचा कर उसने दूध में जहर डाला । और जल्दी-जल्दी में जहर की शीशी मेज पर ही छोड़ कर चलता बना ।
इसका कोई सबूत तो नहीं है हमारे पास । सबूत यही है कि जहर घसीटाराम ने दिया ।
जहर घसीटाराम ने नहीं दिया । यह सिद्ध कर दिया है हमने अभी-अभी । तुम हमें उलझाने की कोशिश मत करो ।
मैं चला ही जाता हूं यहां से अगर तुम बेकार अपना समय नष्ट करना चाहते हो तो करते रहो ।


अपनी बात चेलाराम ने इन्सपैक्टर चोपड़ा को बताई तो वह भी मान गये कि जहर उलटने के लिए शीशी ऐसे नहीं पकड़ी जाती। चेलाराम के कहने पर मिसिज पालकीवाला के कैमरे की सील खोली गई और चेलाराम ने उसकी जांच शुरू कर दी।
कमरे का सामान उलट पलट है!
जांच के दौरान पता चला कि सील बन्द कमरे में कोई खिड़की के रास्ते अन्दर आया था। अन्दर आने वाला अब भी रबड़ के दस्ताने पहने हुए था। उसने कहीं भी अपनी उंगलियों के निशान नहीं छोड़े थे। मिसिज पालकीवाला की अलमारी का सामान फैला पड़ा था। लगता था आने वाला यहां से कुछ चुरा कर ले गया है।
घसीटाराम से पूछने पर पता चला कि मिसिज पालकीवाला ने वसीयत के कागजात इसी अलमारी में रखे थे और वे कागजात अब वहां से गायब थे।
अब तो आप मान गये कोई तीसरा आदमी है जिसने यह षडयन्त्र रचा है। घसीटाराम हवालात में है। वह रोशनदान के रास्ते यहां नहीं आया। वसीयत घसीटाराम के नाम थी। खुद घसीटाराम उसे चुरायेगा, इसका सवाल ही पैदा नहीं होता।
ठीक कहते हो।
इसका मतलब है, इस सारे षडयन्त्र के पीछे उस आदमी का हाथ है जिसे तीन बातों से लाभ पहुंचता है। मिसिज पालकीवाला के मरने से। हत्या के आरोप में घसीटाराम के जेल जाने से और वसीयत चुराकर उसे जाया कर देने से।
ऐसा आदमी कौन हो सकता है? इसका पता कैसे लगाया जाये?
एक आईडिया आया है इन्सपैक्टर। मिसिज पालकीवाला के कैमरे में यह खिंची हुई रील है। क्यों ना इसे डवैलप करके इसके प्रिन्ट लिये जायें। इससे पता चल सकेगा कि मिसिज पालकीवाला की जानकारी और किस-किस से थी। हो सकता है मिसिज पालकीवाला के खींचे किसी फोटो से किसी ऐसे व्यक्ति का पता चल सके। जो अब तक हमारे सम्पर्क में न आया हो। और उससे इस हत्या की गुत्थी को सुलझाने में कोई क्लू मिल सके।
मतलब है पालकीवाला का कोई मित्र। कोई मिलने-जुलने वाला।
या कोई शत्रु।
चेलाराम ने कैमरे की रील वाश की तो उसमें खिंची आखिरी फोटो पर चेलाराम की नजर अटकी की अटकी रह गई।
बाप रे बाप



फोटो के प्रिन्ट निकलने पर
लगता है जब यह स्नैप आटोमैटिक सैल्फ लगा कर लिया गया, तो जहर डालने वाला ...
... अपना काम कर गया। एक और आइडिया आया है
मुझे इस फोटो को बहुत एनलार्ज करना होगा।
फोटो का एनलार्जमैंट तैयार हुआ तो अब गुत्थी सुलझती चली गई थी।
हैल्लो इंस्पैक्टर असली हत्यारे का पता चल गया है। पुलिस गारद लेकर फौरन होटल पहुंच जाइये।
इन्सपैक्टर चोपड़ा मिनटों में वहां पहुंच गये।
यह है उस हाथ की तस्वीर, रबड़ के दस्ताने पहने हुए और जहर डालते हुये। एक्सीलैन्ट, यहां तक पहुंचने में कमाल कर दिया तुम ने।
पर इस से यह कहां पता लगता है कि हत्यारा कौन है ? यूं ही पकड़ लोगे क्या किसी को ?
इस एनलार्जमैंट को गौर से देखिये इन्सपैक्टर चोपड़ा। हत्यारे ने रबड़ के दस्ताने पहनकर अपना हाथ छुपा लिया है। उंगलियों के निशान छुपा लिये हैं, पर अपनी कमीज के इस "स्टंट" को नहीं छुपा सका है, जिस पर स्टार बना है।
और मुझे याद आ रहा है, यह स्टार वाला स्टंट मैंने बार-बार एक ही आदमी की कमीज की बांह पर देखा है।
कौन आदमी है वह ?
जो सामने से चला आ रहा है।
क्यों साहब, पता चला असली कातिल कौन है ?
असली कातिल घसीटाराम ही है।
वह तो मैं पहले ही कह रहा था।



आगामी अंक में अपने इन प्रिय कलाकारों के नये कारनामे देखिये।

धारावाहिक उपन्यास

अनहोनी

15

लेखिका-संगीता

'जरा सोच तो बेटी···हमें इस घर की चारदीवारी में तेरे बिना कैसे लगेगा ? जब तू हमें इस घर में चलती-फिरती दौड़ती-भागती दिखाई न देगी तो हमारे दिलों पर क्या बीतेगी ? कौन शोभना के सिर में तेल डालकर रातों को उसकी टांगें दबाकर सुलाएगा ?'

'डैडी···!' पद्मिनी ने भर्राई हुई आवाज में उत्तर दिया, 'मेरे भाग्य में जब तक आपकी और मां की सेवा लिखी हुई थी वह सेवा कर ली मैंने···शायद आगे के लिए मेरे हाथ में मेरे पति और उसके घर-वालों की सेवा लिखी हुई थी ।'

'लेकिन बेटी···अगर तेरे पति ने तुझे यहां आने से रोक दिया तो ?'

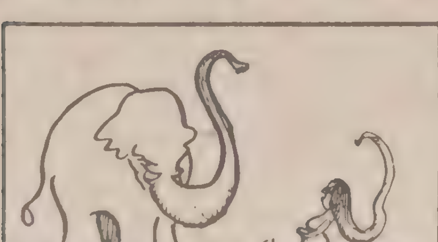
'मेरा भाग्य···।'

'तो क्या तू अपने डैडी और मां को भी भूल जायेगी ?'

'पति सेवा के लिए नारी को सब कुछ भूल जाना पड़ता है ।'

'बेटी···!!'

'डैडी···सब माता-पिता अपनी बेटी को यही तो सिखाते हैं कि अपने पति के घर और पति के माता-पिता को अपने माता-पिता समझना, डैडी सब माता-पिता यही कहकर तो बेटी को घर से विदा करते हैं कि जिस घर में डोली में बैठकर गई हो उस घर से अर्थी पर ही सवार होकर निकलना ।'



'बेटी···फिर भी तुझे यही सीख देना चाहते हैं···हम कब कहते हैं कि तुम अपने पति के घर को अपना घर मत समझना···लेकिन हम तेरे माता-पिता हैं···और इस नाते हमें अपनी बेटी की खुशी भी तो प्यारी है···उसके भविष्य का मुख-चैन भी प्यारा है ।'

'और क्या बेटी !' शोभना भारी आवाज में बोली, 'हमने तुझे आठ बरस की आयु से पाला-पोसा है···तुझे किसी बात का भी कष्ट नहीं होने दिया इसलिए थोड़े ही कि जब तू बड़ी हो जाए तो हम तेरा दिल टूटता हुआ देखें ।'

'मां···!'

'बेटी, हमें मालूम है कि तू बचपन ही से अविनाश से प्यार करती थी···हम जानते हैं कि अगर तुझे अविनाश से अलग कर दिया गया तो अविनाश का भविष्य भी नष्ट हो जायेगा और तेरा सुख-चैन भी जीवन भर के लिए जाता रहेगा ।'

'बेटी !' सेठ साहब फिर बोले, 'इस-लिए तो हम चाहते हैं कि तेरी शादी अविनाश और केवल अविनाश ही से हो ।'

'डैडी···भगवान के लिए ऐसा मत कहिए डैडी ।'

'क्यों ? आखिर क्यों ?'

'डैडी, लड़की की शादी जीवन में केवल एक ही बार होती है···मेरी शादी जिससे हो चुकी है वह भगवान की दया से जीवित है···और वही मेरा पति है ।'

'लेकिन बेटी ! तूने जिस आदमी को ठीक तरह देखा तक नहीं, भला तू उसे अपना पति कैसे मान बैठी है ।'

'डैडी···भगवान को भी किसने देखा है, लेकिन सारी दुनिया उसे भगवान मानती है···फिर मैं तो एक बार उनके दर्शन भी कर चुकी हूँ···और फिर देखने न देखने से होता ही क्या है···मैं उनके संग सात फेरे ले चुकी हूं···पवित्र अग्नि मेरे और उनके ब्याह की साक्षी है···इसलिए मैं उन्हें कैसे छोड़ सकती हूं ।'

'बेटी···उन फेरों का कोई महत्व नहीं अगर वह लड़की और लड़के की खुशी और इच्छा के बिना हुए हों और जिसमें लड़की और लड़के ने जीवन भर साथ निभाने का वचन एक दूसरे को न दिया हो ।'

'और क्या बेटी···' शोभना ने कहा, 'वह शादी तो बचपन में हुई थी···उस बाल-विवाह का कोई महत्व नहीं जिसे लड़का और लड़की समझते न हों···उन्हें यह भी ज्ञान न हो कि विवाह है क्या चीज ?'

'हां बेटी···वास्तव में ब्याह तो वह है जिसमें लड़के और लड़की दोनों की इच्छा सम्मिलित हो···वह ब्याह की ऊँच-नीच को समझते हों···उन्होंने सोच-विचार कर अपने आपको इस बंधन में बांधना स्वीकार किया हो ।'

'बेटी ! तेरा वह पति नहीं है···' मां ने कहा ।

'हां बेटी···।' सेठ साहब बोले, 'अगर तू चाहे तो हम कानून द्वारा भी उससे तेरा छुटकारा करा सकते हैं ।'

'डैडी···!' पद्मिनी की आवाज कांप गई ।

'हां बेटी—तेरे मामाजी गांव जाकर तेरे पति के घरवालों से बातचीत कर लेंगे··· अगर वह लोग नहीं मानते तो हम अदालत द्वारा तुझे इस बंधन से मुक्ति दिला देंगे ।'

'नहीं नहीं···' पद्मिनी कंपकंपाकर पीछे हट गई, 'भगवान के लिए ऐसा मत कहिए··· मैं भारतीय नारी का सम्मान नीचा नहीं करना चाहती—शादी गुड़िया-गुड्डे का खेल नहीं होता—नारी का पहला पति ही उसके लिए देवता होता है—भगवान होता है । आप लोग जो कुछ कह रहे हैं वह तो सोचना भी मेरे लिए पाप है—मैं सपने में भी ऐसा

संगीत

नहीं सोच सकती ।'

'और तू हम लोगों को तड़पते छोड़कर जा सकती है ?' शोभना ने कहा ।

'आज हमें पता चला कि अपना खून ही अपना होता है ।' सेठ साहब ने कुछ क्षुब्ध होकर कहा ।

'डैडी—!'

'अगर तेरी जगह मेरे खून से जन्म लेने वाली मेरी सगी बेटी पद्मिनी होती तो वह इतनी सहज मुझे और अपनी मां को छोड़ने पर सहमत न हो जाती ।'

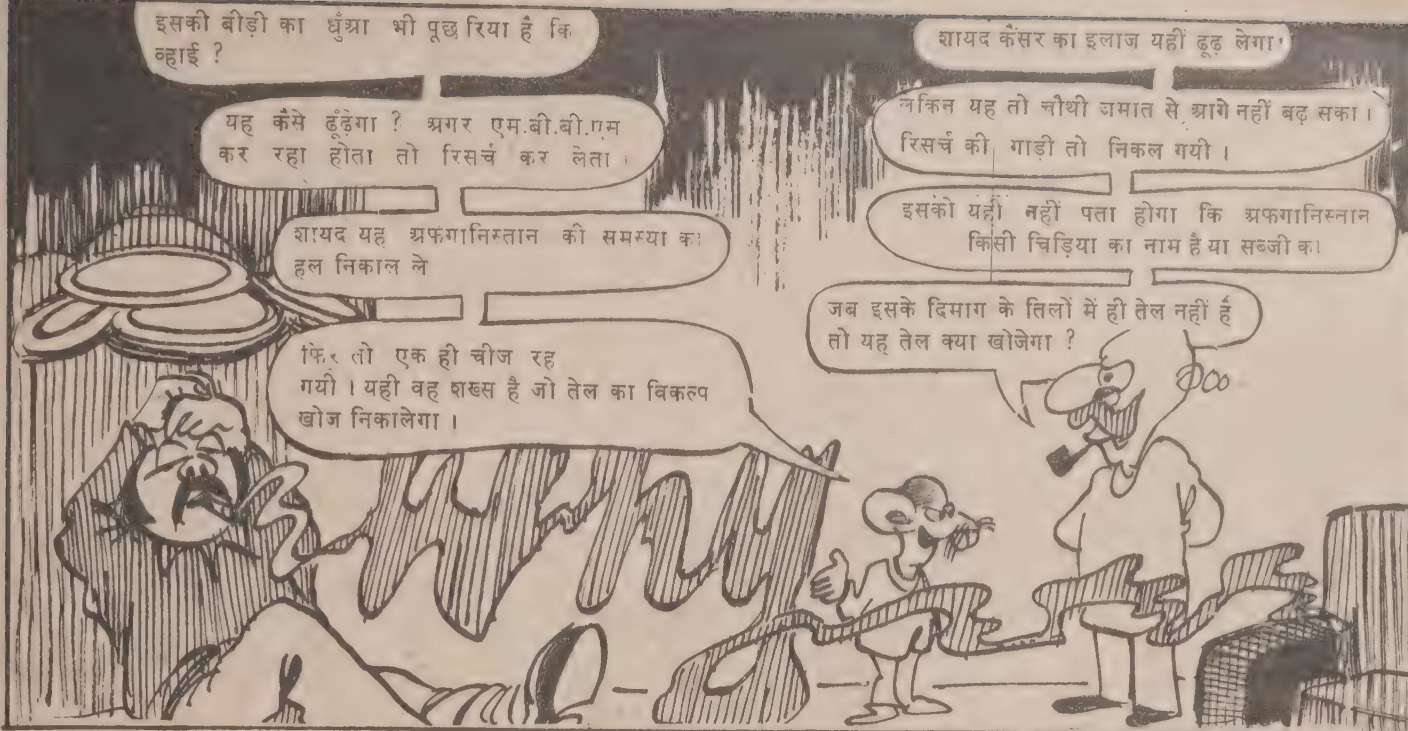
'भगवान के लिए मुझे गलत मत समझिए डैडी ।'

'गलत तो तुझे हम अब तक समझते रहे थे—।' शोभना ने कहा, 'हम समझते थे कि तेरी धमनियों में हमारा खून नहीं है तो न सही···लेकिन तूने जो प्यार हमें दिया है वह सगी बेटी से भी बढ़कर है···लेकिन वह शायद हमारी भूल थी ।'

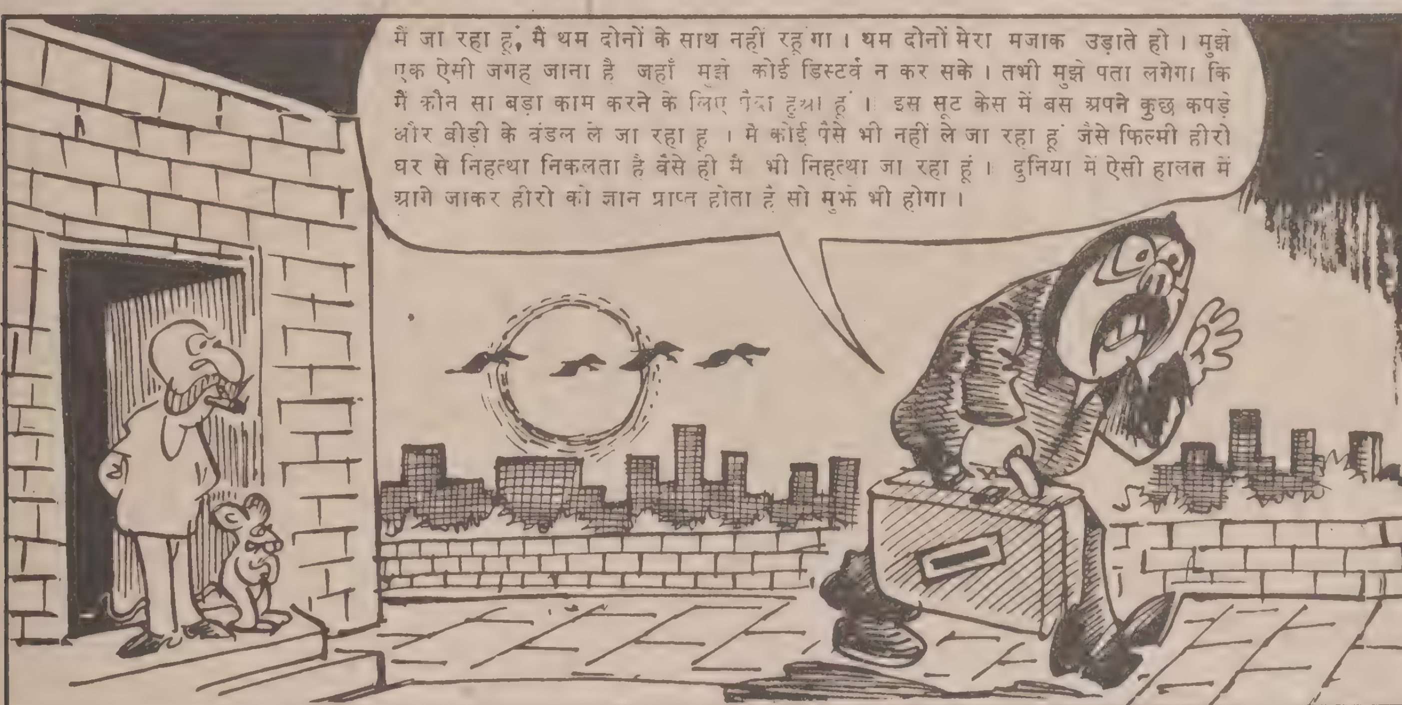
'मां···!!'

'मत कह मुझे मां···।' शोभना भर्राई हुई आवाज में बोली, 'मैं नहीं हूं तेरी मां और न तू मेरी बेटी है ।'

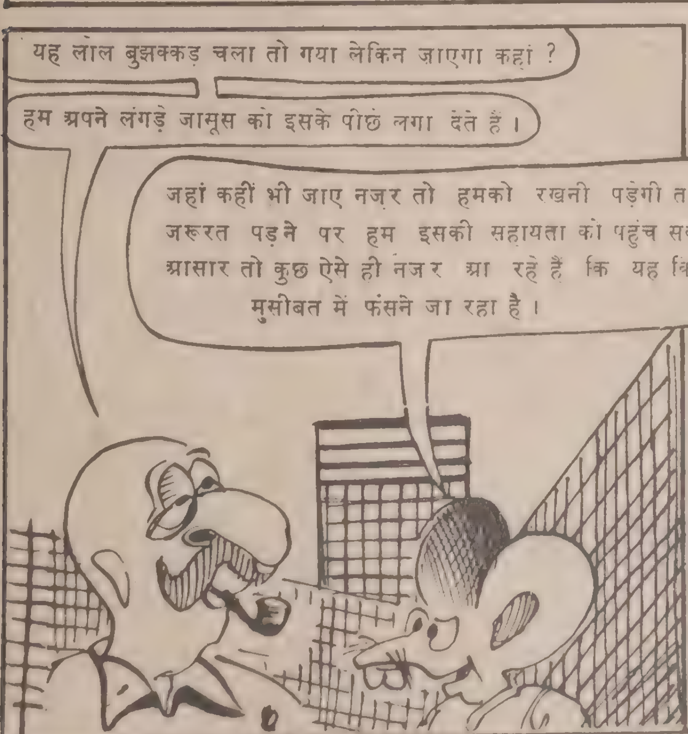
'हम समझ लेंगे,' सेठ साहब ने क्रोधित



इसकी बीड़ी का धुँग्रा भी पूछ रिया है कि व्हाई ?
यह कैसे ढूंढ़ेगा ? ग्रगर एम.बी.बी.एस कर रहा होता तो रिसर्च कर लेता।
शायद यह ग्रफगानिस्तान की समस्या का हल निकाल ले
फिर तो एक ही चीज रह गयी। यही वह शख्स है जो तेल का विकल्प खोज निकालेगा।
शायद कैंसर का इलाज यहीं ढूढ़ लेगा।
लेकिन यह तो चौथी जमात से ग्रागे नहीं बढ़ सका। रिसर्च की गाड़ी तो निकल गयी।
इसको यही नहीं पता होगा कि ग्रफगानिस्तान किसी चिड़िया का नाम है या सब्जी का।
जब इसके दिमाग के तिलों में ही तेल नहीं है तो यह तेल क्या खोजेगा ?



मैं जा रहा हूं, मैं थम दोनों के साथ नहीं रहूंगा। थम दोनों मेरा मजाक उड़ाते हो। मुझे एक ऐसी जगह जाना है जहाँ मुझे कोई डिस्टर्ब न कर सके। तभी मुझे पता लगेगा कि मैं कौन सा बड़ा काम करने के लिए पैदा हुग्रा हूं। इस सूट केस में बस ग्रपने कुछ कपड़े और बीड़ी के बंडल ले जा रहा हू। मै कोई पैसे भी नहीं ले जा रहा हूं जैसे फिल्मी हीरो घर से निहत्था निकलता है वैसे ही मैं भी निहत्था जा रहा हूं। दुनिया में ऐसी हालत में ग्रागे जाकर हीरो को ज्ञान प्राप्त होता है सो मुझे भी होगा।



यह लाल बुझक्कड़ चला तो गया लेकिन जाएगा कहां ?
हम ग्रपने लंगड़े जासूस को इसके पीछे लगा देते हैं।
जहां कहीं भी जाए नज़र तो हमको रखनी पड़ेगी ताकि जरूरत पड़ने पर हम इसकी सहायता को पहुंच सकें। ग्रासार तो कुछ ऐसे ही नजर ग्रा रहे हैं कि यह किसी मुसीबत में फंसने जा रहा है।



घर से भागने के बाद हीरो सबसे पहले पार्क में जाकर बैठता है। उसकी ज्ञान प्राप्ति की शुरूग्रात वहीं से होती है। मैं भी बुद्धा जयन्ती गार्डन जाकर बैठता हूं। वहाँ के बोकिया वृक्ष के नीचे बैठूंगा ग्रौर फिर मेरे जीवन के गूढ़ रहस्य पर से पर्दा उठ जाएगा और ग्रसली फीचर फिल्म शुरू होगी।


अहा बेखबर पर पसार कर बैठा है बेवकूफ शायद सो रहा है। इसे चकमा देने में मुझे कोई दिक्कत नहीं आनी चाहिए। चल बेटे चम्पत लाल आहिस्ते से।
मैं कौन सा बड़ा काम करने के लिए पैदा हुआ हूं ? भगवान भी बड़ा अजीब है पहेलियों में बात करता है। अगर साफ-साफ कैपिटल लैटर्स में लिखकर बता देता तो क्या हर्ज था। मेरा टाईम तो न खराब होता। क्या मैं हेमामालिनी से शादी के लिए पैदा हुआ ? इसलिए तो वह कुंआरी नहीं बैठी अब तक ?
चम्पत लाल का चकमा
चोर चोर
मेरा सूट केस
बड़ी भूल हुयी इससे जो मुझसे उलझ पड़ा ये चोर। मैं इसकी टांगें चीर कर रख दूंगा। मिलखासिंह बन कर अभी धर दबोचता हूं।
नहीं नहीं। शायद यह चोर भगवान का भेजा दूत हो। और सूटकेस का चोरी हो जाना रहस्य के खुलने की सीढ़ी हो इसको जाने दो। पहले पेट पूजा की जाये…फिर बाकी देखेंगे।
देखकर नहीं चलता ? अंधा है।
बड़ा उल्लू है।
तुमने मुझ उल्लू कहा ? बड़ा उल्लू कहा।
इससे साबित हुआ मैं जरूर कोई बड़ा काम करने के लिए पैदा हुआ हूं। इसने उल्लू भी कहा तो बड़ा उल्लू…छोटा नहीं।
बड़े काम की बात याद आई। बड़ी भूख लगी है। मुझे अब छोटी भूख नहीं लग सकती। मैं बड़ा काम करने निकला हूं तो अब हर चीज बड़ी होगी।



पिलपिल सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़ें ।

दीवाना पेज २

अखबारों का पेज २ बड़ा मनोरजंक होता है इसमें वर्गीकृत विज्ञापन होते हैं। काश ऐसे विज्ञापन भी छपते।

व्यक्तिगत

में जालिम सिंह पुत्र खुंखार सिंह मकान न० XYZ'३३, राजौरी गार्डन, नयी दिल्ली, अपना नाम बदलकर नटवर लाल रख रहा हूँ। पुराने नाम से जिनसे मैंने कर्ज ले रखा हो उसका अब में कोई जिम्मेवार नहीं हूंगा।

रिक्त स्थान

जरूरत है ४० एप्रेन्टिस जेबकतरों की। ट्रेनिंग के दौरान खाना पीना व पिक्चर का खर्च मिलेगा! काम सीखने के बाद वेतन के अलावा कमाई में कमीशन मिलेगा। स्वयं मिलें, जेबकतरा शिक्षा केन्द्र, पीछे कम्पनी बाग जामा मस्जिद, दिल्ली।

● चाहिये टेलर मास्टर जो धोती फाड़ कर रुमाल बना सके— आवश्यकता है भूतपूर्व सैनिक सिक्योरिटी गार्डस की। ड्यूटी का समय रात बारह बजे से सुबह आठ बजे तक। मिलें थ्रीऐसिस क्लब, डिफेंस कॉलोनी नई दिल्ली! क्लब में जुआ चलता है। पुलिस का छापा पड़े तो उनसे लड़ना होगा।

चाहिए एक घरेलू नौकर। खाना कपड़ा व १५० रुपये माहवार मिलेंगें। बंहगे और चेहरे पर चेचक के दाग वाले को प्राथमिकता दी जायेगी क्योंकि घर में जवान लड़कियां हैं।

खोया—पाया

शनिवार को दो बजे मैंने इंद्रप्रस्थ कालिज से बस पकड़ी थी। बस में मेरा दिल खो गया है जिस लड़की को मिला हो वह इस पते पर लौटाये।

···बौंदूराम मैकेनिक सरोजनी नगर

पब्लिक नोटिस

निविदायें

प्रेम सिंचाई विभाग, मध्यभारत

मध्य दुग्ध नहर परियोजना

७९-८०

मध्य दुग्ध नहर परियोजना के निम्नलिखित कार्य के लिए अधो-हस्ताक्षरी द्वारा मुहरबन्द निविदायें आमन्त्रित की जा रही हैं। निविदायें अधिशासी अभियन्ता मध्य दुग्ध परियोजना खंड—४ के कार्यालय में सबके सामने खोली जायेंगी।

कार्यालय का नाम (A) शीरी के नहाने के लिए दूध की नहर दो किलो मीटर लम्बी—'दस फुट गहरी व पांच फुट चौड़ी धरोहर राशी—३०००० रुपये कार्य, पूर्ण करने का समय—६ महीने

(B) गड़े मुर्दों की उखड़ाई संख्या २००, धरोहर राशी—५०० रुपये, कार्य पूर्ण करने का समय—१ माह।

(C) पहाड़ खोद कर चूहा निकालना —(विपत्ति का पहाड़) धरोहर राशि—२ लाख रुपये, कार्य पूरा करने का समय --२ वर्ष।

पता—घूसखोर सिंह
अधिशासी अभियन्ता
मध्य भारत और दुग्ध नहर परियोजना



धन

—सूर्य कुमार पाण्डेय

अब वे
यही कहा करते हैं सरे आम
लोग उन्हें बिना बात ही
कर रहे हैं बदनाम
कि उनके पास
'काला धन' है
वे बतलाने हैं—
"भाइयों,
अपना तो जो कुछ है
बस यही लाल धन है।"
क्योंकि
लालधन है उनके
इकलौते लड़के का नाम.

पर्दाफाश

आजाद रामपुरी

माना,
सरकार—
बदली सो बदली,
किन्तु कुछ आदर्श का मुखौटा लगाए
नेताओं का,
असली मुखड़ा तो पहचाना,
देखें अब उन्हें कहां जाना,
क्योंकि नेता जाति तो,
पुनः सत्ता के लिए लड़ेगी,
स्वार्थी काठ की हांडी,
एक बार जल कर राख होते ही,
दूसरी बार कुर्सी पर नहीं चढ़ेगी।
कोल्हू के बैल की भाँति,
घूमकर कुर्सी के चारों ओर,
चुनाव,
हमेशा की भांति,
विरोधी नेता के रूप में ही लड़ेंगे।

×

'गरीबी मिटाओ' अभियान के प्रणेता,
एक नेता,
जिन्होंने दल बदलने में,
लाखों से भर लिए झोले,
मुस्कराकर यों बोले—
पूँजीवादी व्यवस्था अवश्य पिटेगी,
अपनी गरीबी मिटेगी,
बस देश में,
खिचड़ी मेल राजनीति चलती रहे।
और कुछ बदले या न बदले,
सरकार निश्चित ही,
पांच वर्ष में दस बार बदलती रहे॥

पहला कवि

—रामचन्द्र शर्मा 'दुनियादार'

कायर होगा
पहला कवि
भयवश उपजा
होगा गान;
उसके पीछे
भागी होगी
उसकी बीवी
बेलन तान।

उपाय

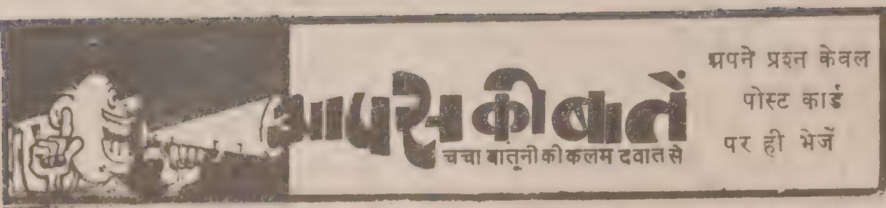
कवि हुक्का

सभापति बनने के शौकीन
एक व्यक्ति ने
आजीवन
सभापति बने रहने का
ऐसा उपाय किया
कि उसने
अपनी पत्नी का नाम
'सभा' रख दिया।

शाबाश बेटे आइसक्रीम खाओ ?

आइसक्रीम खाना हमारा कर्त्तव्य है। इसी से देश आगे बढ़ेगा और हमारी कई समस्यायें हल हो जायेंगी। आइसक्रीम कलयुग का पवित्र प्रसाद है।





अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

एन० के० निन्दी, कपूरथला : दिल की मल्लिका यदि दिमाग चाटना शुरू कर दे, तो…?

उ० : तो समझ लीजिए आप के दिल की वह मल्लिका हमारी श्रीमती है ।

मुकेश भटनागर, "गगन," चित्तौड़गढ़ : चाचा जी, क्या आप मुझसे पत्र मित्रता कर सकते हैं ?

उ० : आपस की बातों के पृष्ठ पर हम यही तो करते हैं ।

केवल प्रकाश, गुड़गांवा : आप सीधे प्रश्नों के सीधे उत्तर क्यों नहीं देते ?

उ० : आजकल कोई भी सीधे उत्तर नहीं देता । कल ही हमने एक बस कंडक्टर से पूछा, 'क्यों भाई, चलती बस से कब और कैसे कूदना चाहिए ? उसने उत्तर दिया, जब अस्पताल सामने हो, तब पहिये के पास कूदना चाहिये ।'

वध्या सिंह, "निराला" पनागर, जबलपुर : चाचा जी पन्ना कोरा हो तो शब्दों से भरा जाता है । दिल कोरा हो तो ?

उ० : दर्दे दिल से ।

योगेश कुमार, अग्रवाल, डीमापुर (नागालैन्ड) : चाचा जी, यह कैसी अंधेर गर्दी है कि मेरा कोई दोस्त गलती करता है तो रिश्तेदार मुझे उसका दोषी ठहराते हैं ?

उ० : इस अंधेर गर्दी की असलीयत कुछ और तो नहीं ? जैसे एक बार एक सज्जन ने अपने बेटे को समझाया, 'बेटा बुरे लड़कों के साथ नहीं खेलना चाहिए । अच्छे लड़कों के साथ खेला करो ।" इस पर बेटे ने उत्तर दिया, "मैं क्या करूं पिताजी, अच्छे लड़कों के मां बाप अपने लड़कों को मेरे साथ खेलने से मना करते हैं ।

प्रहलाद जसवानी, कृष्णा कन्हैया, मण्डला : चाचा जी, मनुष्य को दौलत का नशा कब नहीं होता ?

उ० : जब इनकम टैक्स वालों के सामने हाथ जोड़ने की नौबत आती है ।

योगेन्द्र वर्मा, अलवर : याद रखिये चाचा जी, आप हमारे सवालों के जबाव न देकर बहुत बड़ी बेईमानी कर रहे हैं । जब आप भगवान के दरबार में जायेंगे, तो आपका गिरेबान होगा और हमारा हाथ ।

उ० : चिंता न कीजिये. उस समय हम कपड़े पहने हुए नहीं होंगे ।

अशोक जोहर, "गगन," देहरादून : चाचा जी इन्सान के एक बार ठोकर लगे तो वह सम्भल जाता है । मगर नेता क्यों नहीं सम्भलते ?

उ० : आपने खुद ही तो कहा है इन्सान सम्भल जाता है ।

मोहम्मद जहांगीर, रांची : प्रिय चाचा जी, जनता पार्टी का अब क्या हाल है ?

उ० : जनता पार्टी का हर नेता आजकल अपनी डेढ़ ईंट की अलग मस्जिद बनाये बैठा है ।

श्रीपाल एन० मोदगिल, लुधियाना : क्या आप राजनारायण से मिलकर देश में सरकार बना सकते हैं ?

उ० : राजनारायण से मिलकर देश को बेकार बना सकते हैं ?

शिवशंकर "परवाना" लखनऊ : जब आपकी शादी हुई थी, उस समय क्या आपकी चाँद की यही हालत थी ?

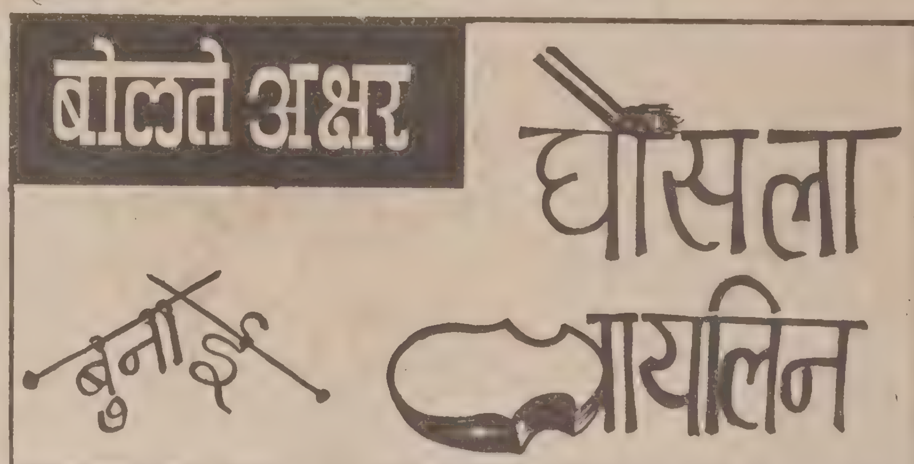
उ० : उस समय हमारी चाँद, चांदनी चौक नहीं थी ।

राम अवतार शर्मा—अम्बाला छावनी : मुझे हर समय हंसते रहने की आदत है । लोग कहते हैं कि बुरी आदत है ?

उ० : अच्छी आदत है, हमारी तरह । जैसे हमें हर समय दूसरों को हंसाने की आदत है इस काम में हमारे भी एक गुरू हैं । हमारे पड़ौस में ही रहते हैं और फोटोग्राफी की दुकान करते हैं । एक बार किसी आदमी की मृत्यु हो गई । उसके घर वालों ने सोचा क्यों न यादगार के तौर पर मरने वाले का एक फोटो खिंचवा लिया जाये ? फोटोग्राफर ने वहाँ पहुंच कर कैमरा फिट किया, पोज बनाया, और जब फोटो खींचने लगे तो मुर्दे की ओर देख कर बोले 'स्माईल प्लीज' ।

के० पी० अरोड़ा—काशीपुर : दीवाना हमें हर सप्ताह नई खुशी देता है । पढ़कर उदासी दूर होती है । बदन में फुर्ती आती है । बदले में हम आपको कैसे खुश करें ?

उ० : हमारे पास लगातार अपने पत्र भेज कर । हम चाहे कितने भी उदास हों और हमारे मुंह पर मक्खियाँ भिनभिना रही हों, डाकिया जब पाठकों के पत्रों का बोरा लाकर हमारी मेज पर रखता है, तो हमारी बत्तीसी खिल उठती है ।



प्रहलाद जसवानी, मण्डला : चाचा जी, दोस्त की दोस्ती कब तक कायम रहती है ?

उ० : जब तक हमारा हाथ दोस्त की जेब में पड़ा रहे और वह एतराज न करे ।

महेन्द्र कुमार तिवारी, बीकानेर : मैं छः वर्ष से लगातार कार्टून बना रहा हूं । पर मेरे कार्टून कोई पत्रिका नहीं छापती । दीवाना में भी मैंने बहुत कार्टून भेजे पर यहाँ भी प्रकाशित नहीं हुये । बहुत समय और रुपया बर्बाद कर चुका हूं । मैं कार्टून बनाने के सभी नियमों का पालन करता हूं, जैसे काली स्याही, बढ़िया सफेद कागज कृपया बताइये मैं इस कला में सफलता कैसे प्राप्त करूं ।

उ० : शायद आप एक नियम भूले हुए हैं । वह है दीवानगी । जिस कार्टून में जितनी अधिक दीवानगी होती है उतना ही रोचक और मनोरंजक माना जाता है ।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : चाचा जी, इन्सान गुस्से में पागल क्यों हो जाता है ?

उ० : गुस्से का तो नाम बदनाम है जसवानी जी । सच पूछिये तो आज का इन्सान हर हालत में पागल है ।

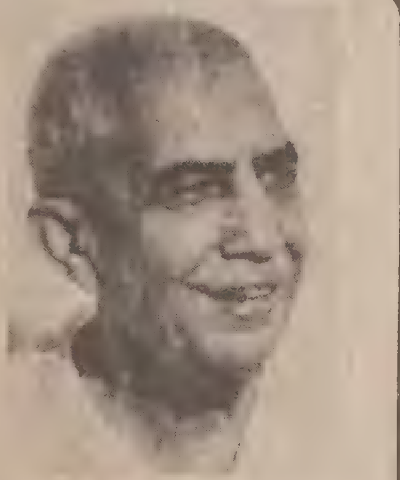
सुनील कुमार शर्मा—सतवारी जम्मू : चाचा जी, मेरी गर्लफ्रेंड ने साथ छोड़ दिया है । बताइये मैं क्या करूं ?

उ० : सब्र से काम लीजिए । हमारी मदर की डैथ हुई तो हमने सब्र से काम लिया था । वह हमारी सब से अच्छी गर्लफ्रेंड थीं ।

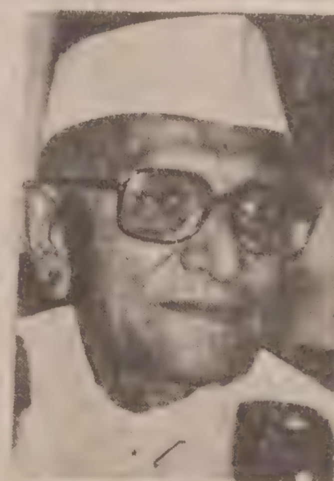
आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पुरानी कहावतें नये चेहरे

कुछ कहावतें राजनीतिज्ञों पर कितनी फिट बैठती है देखिये।



आधी छोड़ सारी को धावे, आधी मिले न पूरी पावे।



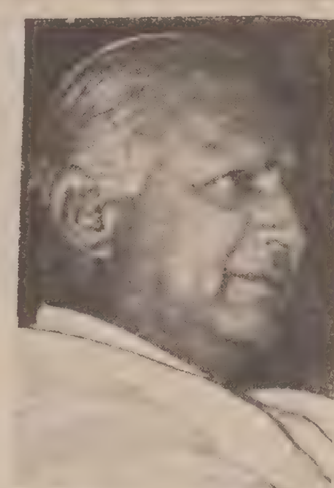
नीम हकीम खतरा-ऐ-जान।



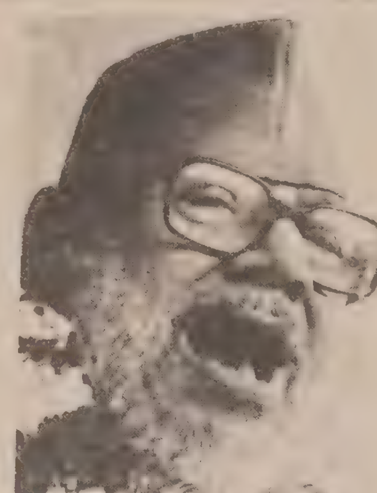
कानी के ब्याह को सौ जोखिम।



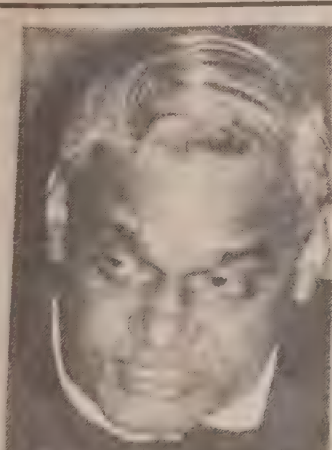
न घर के रहे न घाट के।



चौबेजी गये छब्बे जी बनने दूबे बन के रह गये।



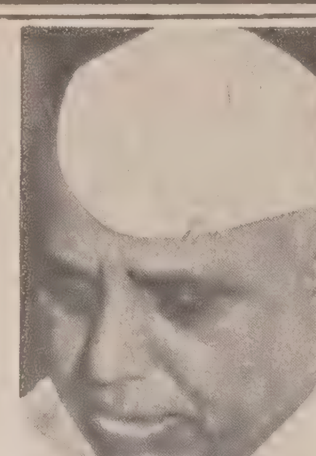
बंदर के हाथ नारियल।



लौट के बुद्धू घर को आये।



कोयलों की दलाली में हाथ काले।



अपना सा मुंह लेकर रह गये।

खदेड़ा

—कुमार अरुण पाण्डेय

मनोयोग से अध्ययन करने हेतु अभी दृढ़-प्रतिज्ञ हो ही रहा था कि सहसा तीव्र धमाके के साथ दरवाजा खुला और चढ़ती-उतरती सांसों पर काबू पाते हुए बेचूलाल जी सरासर भीतर पिलते चले आये। बात न चीत, फटाफट कपड़े उतारे और आदमकद आइने के रुबरू होकर लगे छाती फुलाने और मांस-पेशियां मांजने।

देर तक उनके कथित हुंकार-भरे भरत-नाट्यम से आनंदित होने के बाद भी एका-एक मैं धीरज खो बैठा, "बन्द करो ये तमाशा!"

"खामोश!" वे बिना मुड़े गरजे।

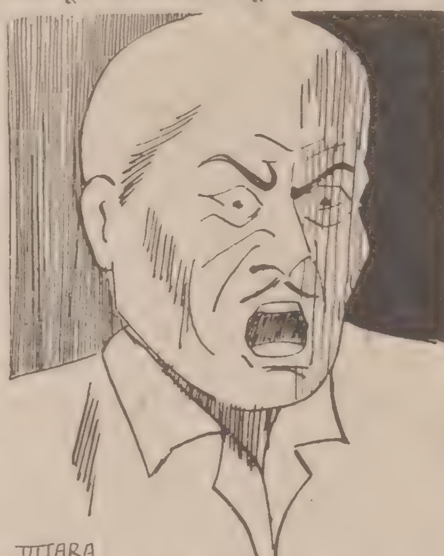
राम कसम! बड़ी हैरत हुई उनकी जवाबी गुर्राहट पर। अब आप ही सोचिए, पेंतीस किलोग्राम वजन वाला कृषकाय मानुष यदि पहलवान बाप के बेटे से 'म्याऊं' करे तो क्या हैरत नहीं होगी? किंतु सदैव की भांति क्रोध पीकर मैंने बेचूलाल जी को बाल-बाल बचा लिया। पिछले दो वर्षों में उन्हें जीवन-दान देने का यह पच्चीसवां मौका था—यह बात मेरी डायरी में नोट है।

इस बार तो उन्होंने हद कर दी। ब्रह्ममुहूर्त में उठकर रियाज मारना, जब-तब दहाड़ना, अनायास धमकियां देना तथा फर्नीचर व दरवाजों पर ठोकरें मारना उनका प्रिय मनोरंजन हो गया। मैं यह समझ पाने में कतई असमर्थ था कि श्रद्धेय बेचूभाई ने इतना भयंकर रूप क्यों धारण कर लिया था। वजह पूछने पर 'मसिल्स' दिखाते हुए मुझे नेस्तनाबूद कर डालने की भविष्यवाणी करने लगते। मेरी हालत इस कदर पतली होती जा रही थी कि न पूछिए।

हारकर मैंने झट घटना से संबंधित जांच-पड़ताल शुरू कर दी। अधिक परेशानी नहीं हुई, तत्काल पता चल गया कि हमारे छात्रावास में एक नये पहलवान टाइप छात्र ने प्रवेश लिया था। अब इस सनसनीखेज नतीजे पर पहुँचते देर न लगी कि अवश्य ही इस पहलवान से प्राप्त प्रेरणा ने बेचू भाई की मानसिक धारा बहकायी थी।

बात यहीं दब जाती तो फिर भी गनीमत होती, किंतु बेचूलाल जी मानें तब ना। 'बिनाश काले विपरीत बुद्धि' को चरि-तार्थ करते हुए वे दूध, पिस्ता, किशमिश, बादाम और जाने क्या-क्या ऊटपटांग चीजों की एक बड़ी तादाद का एकमुश्त सेवन करने लगे। नतीजे में वही हुआ जो उनके क्षीण स्वास्थ्य को मद्देनजर रखते हुए नहीं होना चाहिए था। उन्हें शीघ्र ही एक लम्बे समय के लिए खाट की शरण लेनी पड़ी और फिलहाल मैंने खैर मनायी।

बेचूलाल जी पिछले दो वर्षों से मेरे रूम-मेट हैं और मेरे साथ छात्रावास के कमरा-नम्बर छत्तीस में रहते हैं। सच पूछिए तो छत्तीस के आंकड़े के प्रति हम दोनों की बड़ी श्रद्धा रही है। यह आंकड़ा भली भांति फले-फूले, इसके लिए बेचूभाई सतत प्रयत्न-



शील रहते आये हैं। किंतु पहले वे कदापि ऐसे न थे। मुझे याद है दो वर्ष पूर्व के बेचू लाल जी बदन पर धोती-कुर्ता, पैरों में चम-रौंधा, माथे पर त्रिपुन्ड और सफाचट सिर पर लम्बी-चोटी धारण करने वाले एक निहा-यत दुबले-पतले किंतु शरीफ छात्र थे। प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर कालेज में आये थे किंतु हाय! बेचारे पर न जाने किस दुरात्मा का साया पड़ गया कि गरीब की बुद्धि ही भ्रष्ट हो गयी। अतीत का आदर्श आदिपुरुष वर्त-मान का अत्याधुनिक 'मिस्टर बी. लाल' बनते-बनते अर्द्धविक्षिप्त हो गया। उसके ऊपर खतरनाक दौरे पड़ने लगे।

मेरी डायरी के अनुसार दुर्भाग्य की शुरुआत कोई दो वर्ष पूर्व उस वक्त हुई थी, जब वे छात्रावास में नये-नये आये थे। नया होने के कारण बेचूभाई को छात्रावास की खूंखार रेंगिंग-परम्परा का शिकार होना पड़ रहा था। परंपरानुसार उन्हें बलपूर्वक 'मॉड' बनाया जा रहा था। उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गरीब के कब्जे से चोटी और चमरौधा सहित हर वह वस्तु छीन ली गयी जो उन्हें गांव की याद दिला सकती थी। बदले में उन्हें पान, चाय, सिगरेट, सिनेमा व बेल-बाटम इत्यादि के सद्‌गुणों से परिचित कराने पर पूरा बल दिया गया। सीनियर्स की कृपा! बेचूभाई आशा से अधिक होनहार निकले, अर्थात, चेले को शक्कर होते देर न लगी।

कथित मानसिक व भौगोलिक परिवर्तन के बाद बेचूभाई पर चिंताजनक दौरे पड़ने शुरू हो गए। ऐसे अजीब दौरे, जो कभी देखे न सुने। दौरा आते ही उनकी मान-सिक धारा बहक जाती है और वे सनसनी-खेज हरकतें करने लगते हैं। मसलन, एक बार 'इन्टर द ड्रेगन' नामक कोई फिल्म देख कर आने के बाद उन पर कैराटेबाजी का भयंकर दौरा पड़ा। मुंह से 'हू-हा' की भयावह आवाज निकालते हुए वे पंजे फैला कर मुझ पर जब-तब हमले बोलने लगे। अन्ततः अपनी नष्ट होती जा रही मानसिक शान्ति को बचाने के उद्देश्य से मुझे बेचू-भाई पर बल प्रयोग करना पड़ा। किंतु दुर्भाग्य! मेरे हिंसात्मक रुख को देखते हुए वे पहले से भी अधिक खूंखार नजर आने लगे। तंग आकर मैंने सुरक्षात्मक गति-विधियां अपना लीं और सतर्क रहने लगा। जब भी उनकी मानसिक धारा बहकती है मुझे यही करना पड़ता है।

वैसे, 'सैन्यविज्ञान' का छात्र होने के नाते मुझे युद्ध के सिद्धांतों की पूरी जान-कारी भी है, किंतु कहावत है कि जब भी किसी आततायी का प्रकोप बढ़ता है ऊपर वाला स्वयं उसे देख लेता है, अतः मेरे कुछ करने-धरने से पूर्व ही बेचू भाई को कुदरती सबक मिल गया। ऐसा तब हुआ, जब कैराटेबाजी के चक्कर में उन्होंने एक मुश्त आधा दर्जन ईंट बीच से तोड़ने का अदूर-दर्शितापूर्ण यत्न किया। नतीजे में उनके कोमल पंजे की कुछेक हड्डियां टें बोल गईं। फिर हफ्तों प्लास्टर चढ़ाये फिरने के बाद ही वे पुनः स्वस्थ हो पाये।

एक और दौरा बेचू भाई पर तब पड़ा जब दुर्भाग्य से मेरी व्यक्तिगत डायरी उनके हाथ लग गयी। डायरी में मेरे एक प्रख्यात धावक मित्र के क्रियाकलापों का वर्णन था। बस, बहक गई उनकी मानसिकता। हमारे छात्रावास के सामने ही कॉलिज की फील्ड स्थित है। एक दिन अल्लसुबह सैर को निकले छात्रावास के सदस्य बेचूभाई को निरंतर ट्रेक की परिक्रमा करते देखकर दंग रह गये। उन्होंने रुमाल मुंह में ठूंसी हुई थी

सवाल यह है?

मुहावरों के असली और दीवाने अर्थ क्या हैं ?



पृष्ठ १८ का शेष भाग

साथी।'

'यह अविनाश मेरे लिये केरियां तोड़ रहा है।'

मुझे डाकूओं से बचाने के लिए गुलेल चला रहा है।'

'अविनाश मुझसे रूठ गया है।'

'यह मां और डैडी हैं···'

'इन्होंने मुझे अपनी सगी बेटी के समान पाला पोसा है।'

'और अब···अब यह हमेशा के लिए मुझसे रूठ गए हैं।'

'अब मैं इनमें से किसी को भी जीवन के किसी मोड़ पर भी नहीं देख सकूंगी।'

'इन लोगों से मेरा नाता सदा के लिए टूट गया है।' सोचते-सोचते पद्मिनी की आंखों में आंसू आ गए—फिर उसकी कल्पना में अपने कालिज के साथी घूमने लगे।

'वह कालिज अब मैं कभी न देख सकूंगी।'

'अब तो ससुराल की चारदीवारी ही में समय काटना पढ़ेगा—वह भी देहाती ससुराल।'

अचानक यशपाल अंदर आए और जल्दी से बोले—

"बेटी···वह लोग आ गए हैं।"

'पद्मिनी हड़बड़ा कर खड़ी हो गई। उसका दिल एकाएक बहुत जोर से धड़का था···पूरा बदन थरथर कांपने लगा था उसे शीत सी अनुभव होकर शरीर में झुरझुरी दौड़ गई थी और आंखों से घबराहट झांकने लगी थी। यशपाल ने उसे फूलों की माला देते हुए कहा—

"बेटी···यह तुम्हें अपने पति को पहनाना है···वह लोग अधिक समय ठहरना भी नहीं चाहते···वह दिन ढलने से पहले ही तुम्हें विदा कराके ले जायेंगे।"

'पद्मिनी ने कांपते हाथों से माला ले ली और सिर झुकाए यशपाल के पीछेचल पड़ी···उसने सोचा यह उसके जीवन के आजादी के अन्तिम क्षण हैं···अन्तिम पग हैं। उसने सोचा···जिस समय वह अपने पति के गले में यह माला डालेगी उसी क्षण से उसकी स्वतंत्रता समाप्त हो जाएगी···।

थोड़ी देर बाद पद्मिनी घर से बाहर जयमाला लिए अपने पति के सामने खड़ी थी···पद्मिनी के चेहरे पर घूंघट था और उसके कांपते हाथों में फूलों की माला···फिर एक दूसरे को माला पहनाने के लिए ज्योंही दोनों ने अपने हाथ उठाए उनकी दृष्टि एक साथ आपस में टकराई···और···! !

दूसरे ही क्षण माला पद्मिनी के हाथों से छूटकर नीचे गिर पड़ी···उसे ऐसे लगा जैसे आकाश एकाएक तेजी से नीचे उतरकर धरती से टकरा गया हो···जैसे वातावरण हजारों बमों के धमाकों से गूंज उठा हो और चारों ओर आग के गोले फैल गए हों···।

यही दशा दुल्हा की भी थी···उसके हाथों से भी माला छूटकर गिर गई और उसके कांपते होंटों से आवाज निकली—

'प···प···प—पद्मिनी···त···त···तुम···!'

'शिव···भैया'! पद्मिनी कांपती आवाज में बोला, "यह···तुम···हो तुम···तुम···तुम तो···मेरे···भैया···बने थे···!"

"हे···भगवान! यह क्या हो रहा है?" शिव पागलों के समान अपना माथा मसलता हुआ बोला—"यह···यह···यह लड़की नो मेरी बहन बन चुकी है···मेरे हाथ पर राखी बांध चुकी है···भला यह मेरी पत्नी कैसे बन सकती है?"

"बेटे···?" यशपाल कंपकंपाती अवाज में बोले, "यह तुम···क्या कह रहे हो?"

मैं···मैं 'सच कह रहा हूं···मामाजी।'

अचानक पद्मिनी लड़खड़ाई और धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ी···शिवदत्त ने घबराकर जल्दी से उसके पास बैठकर उसे टटोला—

"पद्मिनी···पद्मिनी···?"

लेकिन पद्मिनी की आंखें फटी की फटी रह गई थीं···। उसकी पुतलियां ज्योतिहीन हो चुकी थीं··· उसके दिल की धड़कनें रुक चुकी थीं···आत्मा शरीर त्याग चुकी थी···।

तभी शोभना चलती हुई अन्दर आई···उनकी आंखें अब ठीक थीं···लेकिन उनकी पद्मिनी चली गई थी···वह अनायास पद्मिनी पर झुककर उससे लिपटकर दहाड़ें मारकर रोने लगीं और सेठ साहब आश्चर्यचकित आंखें फाड़े शिवदत्त को देखे जा रहे थे···

प्रभु की लीला न्यारी है···बहुत न्यारी

॥ समाप्त ॥

पृष्ठ का ३२ शेष भाग

और हांफते-हांफते दौड़ते ही जा रहे थे बहुत रोकने व समझाने पर भी न माने, कहने लगे कि अब की बार आठ सौ मीटर की दौड़ का चैम्पियन बनना है।

सुबह की सैर से लौटने के बाद हमें यह देख कर गहरा आघात लगा कि बेचू भाई ट्रेक पर अचेत पड़े थे। उनकी आंखें उलटी हुई थीं ओर नब्ज डूब रही थी। चटपट उन्हें हस्पताल पहुँचाया गया। मरीज की बीमारी का कारण सुनकर डाक्टर महोदय के नेत्र-चौड़े हो गये। उन्हें अपनी बीस वर्ष पुरानी नौकरी में प्रथम बार इस नये किस्म के मरीज के दर्शन हुए थे। बहरहाल, बेचूभाइ स्वस्थ हुए और हमने राहत की सांस ली।

पर उनकी बीमारी हमारी समझ से बाहर है। एक दौरा खत्म होते-होते दूसरा जड़ें जमाने लगता है। बेचू भाई स्वयं तो मुसीबत झेलते ही हैं, मौके-बेमौके हमें भी लपेट में लेना नहीं भूलते। एक बार तो 'भयानक डाकू' नामक एक रोमांचक उपन्याम पढ़कर वे इस कदर दौराग्रस्त हुए कि संपूर्ण छात्रावास की मानसिक शान्ति खतरे में पड़ गई। उपन्यास में वर्णित कथानक डाकू के तिलस्मी कारनामों से प्रेरणा लेकर बेचू भाई ने नकली दाढ़ी-मूछों व पिस्तौल आदि के जरिए डाकू वेश में कई रातों तक छात्रों की नींद हराम कर रखी। पकड़े जाने पर उन्होंने खूब कान पकड़े और तौबा की, तब कहीं जाकर उनका स्वास्थ्य सुरक्षित बचा।

आज भी बेचू लाल जी छोटे-मोटे गुल खिलाते हुए किसी नये और बड़े दौरे की प्रतीक्षा में जीवित हैं और हम सब आगामी खतरों से निपटने हेतु युद्ध-स्तर पर तैयार!

हा हा हा

एक शराबी नशे में धुत शराब घर में घुसा उसने बगल में एक मुर्गा पकड़ रखा था शराब खाने के मालिक ने शराबी से बहुत इज्जत से बात की और शराब पेश की। शराब पीते-पीते शराबी बोला, 'मैं तुम्हारी बात करने की तहजीब देख बहुत खुश हुआ! हिच! बहुत खुश! मैं यह मुर्ग तुमको इनाम दे रहा हूं इसके लिए।'

शराबघर का मालिक खुश हुआ और उसका बहुत धन्यवाद कर बोला, 'मैं इसको रात के खाने के लिए घर ले जाऊंगा।'

शराबी ने झूमते हुए कहा, 'नहीं-नहीं!' रात का खाना तो यह खा चुका! हां, खा चुका, तुम इसको पिक्चर का आखिरी शो दिखाने ले जाना।'

●

एक युवा लेखक ने अपना उपन्या प्रकाशक के पास भेजा। कुछ दिनों बा वह प्रकाशक से मिला।

प्रकाशक बोला, "लिखा तो अच्छा है लेकिन माफ कीजिए हम जाने माने लेखक को ही छापते हैं।"

युवा लेखक चिल्लाया, "बहुत खूब मेरा असली नाम कालीदास है।"

चुटकले

● एक प्रसिद्ध कवि से कोई मिलने आया। उसने नौकर से दरवाजे पर पूछा, "क्या साहब काम कर रहे हैं ?"

नौकर बोला, "नहीं। वह कविता लिख रहे हैं।"

● दो स्त्रियां मिलीं। एक बोली, "भाई कल एक पार्टी में मैं तुम्हारे पति से मिली वह तो बहुत विद्वान आदमी हैं। सचमुच ज्ञान का भन्डार हैं। ऐसा कोई विषय नहीं जिसके बारे में वह पूरा न जानते हों।"

दूसरी बोली, बेवकूफ न बनो। अगर उनको मेरे विषय में पता होता तो कब का मुझे तलाक दे दिया होता।"

● सिपाही ने गाड़ी रुकवाई और चालक से पूछा, "साहब, आप रात को गाड़ी चला रहे हैं और बत्तियाँ नहीं जला रखी हैं ?"

चालक, "अच्छा ? मुझे तो पता ही नहीं लगा।"

सिपाही, "आपके पास ड्राइविंग लायसेंस है ?"

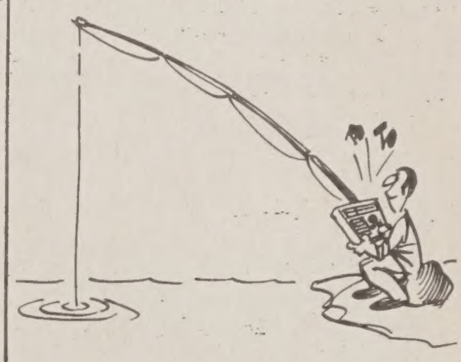
चालक, "मैंने कभी बनवाया ही नहीं।"

सिपाही, "हूं ! गाड़ी के ब्रेक तो ठीक हैं ?"

चालक, "ब्रेक राम भरोसे ही काम करते हैं।"

सिपाही, "फिर तो मुझे आपका चालान करना पड़ेगा। आपने तीन अपराध किये हैं।"

चालक की पत्नी, "हवलदार साहब आप इनकी बातें मत सुनिये ! इन्होंने आज बहुत पी रखी है।"



अंक नं॰ ६ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के हल

वर्ग पहेली का हल

का	ली	क	मा	ई
ठ	■	थ	■	ख
गो	प	नी	य	■
दा	ह	■	की	ल
म	ल	खा	न	■

विजेता : अल्पना अग्रवाल
द्वारा प्रशान्त कुमार अग्रवाल
प्रेम कुटीर रानी बाजार
बीकानेर 334001

सोचिये का सारांश
दिल की गहराईयों में डूबी प्रेम भावनाएं व्यक्त करना ही, प्रेम में सफलता की कुंजी है।

विजेता :- सुमन मोहन कृष्णात्री
कृष्णात्री कुटीर संगरिया (राज॰)

शीर्षक बताईये का हल
यार यह दुलहन शादी से पहले टी॰ वी॰ में एनाऊँसर थी इसलिए इसके लिए यह विशेष पाल की बनाई गई है।

विजेता :- हरीश बहल
WZ-35 मीनाक्षी गार्डन
नई दिल्ली - 18

अंक ८ में प्रकाशित पहचानिये का हल : कलाकार : रामेश्वरी, मिथुन चक्रवर्ती

विजेता : इकबाल सिंह (लुधियाना)

दीवानी बात :- तुझे मेरे जैसा लड़का नहीं मिलेगा।

दीवाना वर्ग पहेली 15 रुपये पुरस्कार जीतिये

1	2		3	4
5		■	6	
7		■	■	
■	8	9	10	
■	■			■

अन्तिम तिथि : २१ जून १९८०

संकेत

बायें से दायें

१. दो देशों के बीच खेल के मैदान में शक्ति परीक्षण। (३, २)
५. गोकुलवा से सारे खानदानियों को निकालने के बाद बची जगह ? (२)
६. शरीर का भाग जिसके प्रायः टूटने, कटने व बहने की आशंका बनी रहती है। (२)
७. उल्टे शायर द्वारा खेली जाने वाली ताश की बाजी ? (२)
८. अचानक जल उठी लौ में रस डालने के लिए पूरा जोर लगाना पड़ता है ? (४)
९. खून के पैरों की आवाज जो डाक्टर सुनता है ? (४)

ऊपर से नीचे

१. शर्मिला पटौदी जो पहले थी। (३)
२. एक फिल्म की पूजा करने वाला वफादार ? (५)
३. चिड़िया जो खुद के बारे में इन्कार करती है ? (२)
४. जलाने का प्राचीन साधन। (४)
६. बनाई एक उल्टी संख्या। (२)
१०. बिना कान का सर्प या सीप जिसकी मात्रा का शुमार नहीं ? (२)

हा हा हा

● एक प्रसिद्ध व्यक्ति नाटे कद का था। एक बार ऐसा इत्तफाक हुआ कि एक पार्टी में वे चारों ओर से लम्बे कद के व्यक्तियों से घिर गये ! एक व्यक्ति ने उनसे व्यंग्यपूर्वक पूछा, 'महाशय इन बड़े आदमियों के बीच आप इस समय अपने को बहुत छोटा पा रहे होंगे ?'

उत्तर मिला, 'हां ! इस समय मुझे ऐसा ही लग रहा है जैसे २५ पैसे का सिक्का दस-दस पैसों के बीच पड़ गया हो।'

● एक नेता ने दूसरे नेता के बारे में कहा, 'अगर भ्रष्टाचार से बिजली पैदा की जा सकती तो मेरे विरोधी नेता महोदय देश का सबसे बड़ा बिजली घर होता।'

● सास (दामाद से) 'बेटा कल कितने बजे जाएगी मेरी गाड़ी ?'

दामाद, 'मां जो अब से ठीक सोलह घंटे, १५ मिनट और तेतीस सैकंड बाद।'

● प्रेमी अपनी नयी कार में प्रेमिका को सैर कराने ले गया। प्रेमिका बहुत खुश हुयी, 'अहा ! ऐसे लग रहा है जैसे हम स्वर्ग में घूम रहे हैं। प्रिये थोड़ी देर मुझे ड्राइविंग करने दो।' प्रेमी ने ऐसा ही किया।

अब सचमुच दोनों स्वर्ग में घूम रहे हैं।

बिल्लू के करामाती जूते



बिल्लू मॉडल हायर सैकंड्री स्कूल के नजदीक वाले मैदान में गया जहां फुटवाल के शौकीन लड़के रोज इकट्ठे होकर खेलते थे। सब बड़े होकर मोहन बागान या ईस्ट बंगाल की टीमों की ओर से खेलने के सपने देखते थे।
मैं बड़ा होकर चुन्नी बनूंगा।
मैं गौतम सरकार।
मैं हबीब बनूंगा।
मैं पेले बनूंगा।
कौन बिल्लू? जा जा। तू कुछ नहीं बन सकता।
यह मुँह और मसूर की दाल।
जरा इसे एक किक मारने दो। हंसी आयेगी।
ले बिल्लू जरा किक मारकर दिखा।
बिल्लू ने किक मारने की कोशिश की।
देखा? इससे अच्छी किक तो बच्चा मारेगा।
जा जा! जाकर बच्चों के साथ कंचे खेल।
गेंद दस फुट दूर जाकर रुक जायेगी।
इसकी टांगें बांस की खपच्चियां जैसी हैं।
सब मेरा मजाक उड़ाते हैं। मुझे कोई नहीं खिलाता।
बिल्लू निराश होकर घर लौटा।
बिल्लू तू आ गया? तू तो फुटबाल खेलने गया था।


आप को पता लगता है आप
र जासूसी नावलों का नशा सवार है जब..
खटं!
वाज आते ही हाथ बिजली की तेजी से कमर
क जाता है, पिस्तौल निकालने की मुद्रा में।
BUS
आपको अपनी तरफ देखती मिले तो शक होने
है, यह दुश्मन की जासूस तो नहीं है।
खून पुलिस
पहले यह अपनी प्रेमिका का नाम बड़बड़ाया करता था।
नींद में बड़बड़ाते हुये भी खून व पुलिस से पीछा नहीं छूटता।
प्रकार के धुये से बारूद की गंध आती है।
कल मुझे देख इसने चौदह बार पूछ हिलायी लेकिन आज केवल ग्यारह बार, गुप्त संदेश या इशारा है यह ?
हर चीज में रहस्य छुपा नजर आता है।

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82